1) घन :- घन के अन्तर्गत रखे गये जो ठोस धातु से निर्मित थे। जिनका उपयोग स्वर एवं ताल दोनों की संगति के लिये किया जाता था। जैसे :-

घंटा, घड़ियाल, झाल, कंशी

2) सुषिर :- सुषिर के अन्तर्गत उन वाद्यों को रखा गया जिसमें वायु के प्रहार से स्वर स्वर उत्पन्न किये जाते हैं

जैसे :- शंख, बाँसुरी, क्लारनेट, सिंहा, रणभेरी, शहनाई, इत्यादि

) अवनद्ध :- इसके अन्तर्गत उन वाद्यों को रखा गया जिनका उपयोग संगीत में ताल संगीत के लिए किया जाता है। जो चमड़े से मढ़े होते हैं। जैसे :- मृदंग, पखावज, तबला, ढोलक, नाल, नगाड़ा, डुग्गी इत्यादि।

इस तरह नाट्यशास्त्र मे उल्लेखित संगीत तथ्यों का अध्ययन हमे भारतीय संगीत की आन्तरिक संरचना एवं वैज्ञानिकता को समझने में एक ठोस आधार प्रदान करते है।